नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

गंगा की कहानी प्रहरियों की जुबानी

गंगा की कहानी प्रहरियों की ज़ुबानी

सम्पादन एवं संकलन
रूचि बडोला
एस. ए. हुसैन

जनपद वाराणसी
में 27.56 लाख

भारतीय वन्यजीव संस्थान
चन्द्रबनी, देहरादून, दूरभाष: 91-135-2640111 से 2640115, फैक्स: 0135-2640117,
ई-मेल : wii@wii.gov.in; वेब: www.wii.gov.in

© एन.एम.सी.जी.

सर्व अधिकार सुरक्षित। कॉपीराइट स्वामी की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग की प्रतिलिपि नहीं बनाई जा सकती या किसी प्रकार की प्रतिलिपि बनाने वाली प्रणाली में इसका संग्रह नहीं किया जा सकता है और न ही इसको किसी इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक व फोटो प्रतिलिपि बनाने, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी कार्य के लिये, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से संप्रेषित किया जा सकता है। प्रकाशक इस प्रकार की अनुमति के लिये, अपने उद्देश्य या किस सीमा तक इसकी प्रतिलिपि बनाई जायेगी, इसका विवरण अवश्य दें।

ISBN: 978-81-951908-9-8

संस्करण: प्रथम, 2022

परियोजना समन्वयक
रुचि बडोला
एस. ए. हुसैन

सहभागी समूह
संध्या जोशी
दीपिका डोगरा
हेमलता खण्डूरी
मानसी बिजल्वाण

प्रकाशक एवं मुद्रक

श्री अभिमन्यु गहलौत द्वारा मै0 बिशन सिंह महेंद्रपाल सिंह, 23-ए, न्यू कनॉट प्लेस देहरादून, इण्डिया एवं भारतीय वन्यजीव संस्थान, चन्द्रबनी, देहरादून, इण्डिया के लिये प्रकाशित। मुद्रक शिवा ऑफसेट प्रेस 14, ओल्ड कनॉट प्लेस, देहरादून, इण्डिया।

असहमति (Disclaimer) इस पुस्तिका में दी गई सभी सूचनाओं व विवरणों और साथ ही सूचनाओं के स्रोत और फोटोग्राफ आदि को देने से पहले इनकी सत्यता सुनिश्चित करने का पूरा प्रयास किया गया है। पुस्तिका में दिये गये विवरणों में किसी भी प्रकार की त्रुटि जानबूझ कर नहीं की गई है। इसके लिये राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन एवं भारतीय वन्यजीव संस्थान किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं लेगा।

गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार
Minister for Jal Shakti
Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

04 अप्रैल 2022

संदेश

गंगा नदी को आदि काल से हिन्दू धर्म में एक पवित्र नदी का दर्जा दिया गया है, जोकि भारत देश में करोड़ों लोगों की धार्मिक आस्था से जुड़ी है। गंगा नदी उत्तराखंड के गंगोत्री ग्लेशियर से निकलकर बंगाल की खाड़ी तक 2525 कि.मी. का सफर तय करती है। अपनी इस यात्रा के दौरान गंगा विश्व के सबसे उपजाऊ और घनी आबादी वाले भूभाग से होकर गुजरती है।

गंगा एवं उसकी सहायक नदियों से बढ़ रहे प्रदूषण को कम करने के लिए भारत सरकार ने सन् 2014 में नमामि गंगे कार्यक्रम की शुरूआत हुई जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की नींव रखी गई। इस मिशन के अंतर्गत गंगा एवं उसकी सहायक नदियों के संरक्षण की दिशा में अनेकों कार्य किये जा रहे हैं जिनमें नदी तटों पर वृक्षारोपण के कार्य, सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट, घाट, शौचालय, शवदाह गृह का नवीनीकरण एवं निर्माण किया जा रहा है। इन सभी पहलों से सतही सफाई से लेकर ठोस एवं तरल कचरे का प्रबंधन एवं मरम्मत संबंधी कार्यक्रम किये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त गंगा नदी की जैव विविधता के संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए सन् 2017 में भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून को जैव विविधता एवं गंगा संरक्षण की परियोजना का कार्यभार सौंपा गया।

भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा जैव विविधता संरक्षण की दिशा में जहां एक ओर गंगा की पारिस्थितिकी तंत्र का सर्वेक्षण एवं जलीय जीवों का आंकलन किया जा रहा है। वहीं दूसरी ओर इन प्रयासों को सतत बनाने के लिए स्थानीय समुदाय को जैव विविधता संरक्षण के इन कार्यो में प्रोत्साहित करने के लिए अनेकों प्रयास किए गए हैं। इसके अंतर्गत स्थानीय समुदायों को गंगा प्रहरी पहल से जोड़ा गया ताकि राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन और भारतीय वन्यजीव संस्थान के इन

प्रयासों को और मजबूती मिले। मुझे बेहद खुशी है कि गंगा किनारे के समुदाय आज गंगा प्रहरी के रूप में न केवल जैव विविधता संरक्षण संबंधित गतिविधियों में सक्रिय हैं अपितु वे सभी भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा क्रियान्वित कौशल विकास प्रशिक्षणों के अंतर्गत अपनी क्षमताओं का भी विकास कर रहे हैं। वे सभी अपने क्षेत्र में जन जागरण के कार्यो में नेतृत्वकारी भूमिका निभा रहे हैं। मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि उनके द्वारा किये जा रहे इन प्रयासों को जानने एवं समझने का मौका मिला कि किस प्रकार से साधारण जनमानस, गंगा प्रहरी के रूप में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तिका के माध्यम से गंगा प्रहरी एवं गंगा प्रहरी मेंटर अपने अनुभव और विचार जन साधारण के समक्ष रख रहे हैं। अपने इस प्रयास के लिए मैं भारतीय वन्यजीव संस्थान और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पुस्तिका हम सभी को गंगा के प्रति संवेदनशील बनाते हुए गंगा की अविरलता और निर्मलता को बनाए रखने में एक मशाल का काम करेगी।

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

Office: 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel: No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, Fax: (011) 23710804
E-mail: minister-jalshakti@gov.in

जी अशोक कुमार, भा.प्र.से.
महानिदेशक
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन

G Asok Kumar, IAS
DIRECTOR GENERAL
NATIONAL MISSION FOR CLEAN GANGA

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन,
नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION

संदेश

गंगा नदी का ना सिर्फ धार्मिक महत्व है बल्कि देश की 40 प्रतिशत आबादी गंगा नदी पर निर्भर है। नदी में बढ़ते प्रदूषण को समाप्त करने एवं संरक्षण की दिशा में कार्य करने के लिए सन् 2014 में नमामि गंगे परियोजना की शुरूआत की गई। यह समझते हुए कि गंगा संरक्षण की चुनौती बहुक्षेत्रीय और बहुआयामी है और इसमें कई हितधारकों की भूमिका है, विभिन्न मंत्रालयों के बीच तथा केन्द्र एवं राज्यों के बीच समन्वय को बेहतर करने तथा कार्य योजना में सभी की भूमिका सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया। इसके साथ गंगा नदी की स्वच्छता एवं अविरलता बनाये रखने में जन समुदाय की भागीदारी के महत्व को भी बढ़ावा दिया गया।

भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा सामुदायिक सहभागिता बढ़ाने व समुदाय को गंगा और उसकी जैवविविधता के संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिये गंगा प्रहरी कैडर का निर्माण किया गया है। ये गंगा प्रहरी अपने अपने क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन एवं सरकार के विभिन्न विभागों के समन्वय के साथ सराहनीय कार्य कर रहे हैं। कौशल विकास संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात ये गंगा प्रहरी जलज डॉल्फिन सफारी तथा विभिन्न सूक्ष्म उपक्रमों के माध्यम से अर्थ गंगा की अवधारणा को साकार करने में भी योगदान दे रहे हैं। इस पुस्तक के माध्यम से लोगों को गंगा प्रहरी कार्यक्रम से जुड़ने तथा गंगा प्रहरियों को संरक्षण सम्बंधी कार्यों के दौरान हुये अनुभवों को संकलित किया गया है। विभिन्न क्षेत्रों में अपने कार्य कौशलों से संबंध रखने वाले इन प्रहरियों के गंगा व उसकी जैवविविधता के संरक्षण से जुड़े अनुभवों को पढ़कर निश्चित ही अन्य लोग इनके अनुभवों से सीखेंगें और प्रेरणा लेंगें।

इस पुस्तक को स्वरूप देने के लिये मैं भारतीय वन्यजीव संस्थान में परियोजना के तहत कार्यरत टीम को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में ये गंगा प्रहरी अपने अनुभवों और क्षमताओं को और बढ़ाते हुये कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगें।

(जी अशोक कुमार)

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
प्रथम तल, मेजर ध्यान चंद्र नेशनल स्टेडियम, इन्डिया गेट, नई दिल्ली–110002
NATIONAL MISSION FOR CLEAN GANGA
1st Floor, Major Dhyan Chand National Stadium, India Gate, New Delhi - 110002
Ph: 011-23049528 Fax: 23049566 E-mail : dg@nmcg.nic.in

हमारी बात

भारत सरकार के नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत जैवविविधता और गंगा संरक्षण के लिये यह विज्ञान आधारित परियोजना, भारतीय वन्यजीव संस्थान को राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा दी गई है। इस परियोजना की मुख्य विशेषता यह है कि हमें सभी साझेदारों मुख्यत: स्थानीय समुदायों को गंगा की जैवविविधता संरक्षण के साथ जोड़ना है। स्थानीय समुदायों के साथ काम करने का हमारा अनुभव लगभग 30 सालों का है, परंतु इससे पहले हमने केवल जंगल से जुड़े समुदायों के साथ ही काम किया था। पहली बार हम किसी नदी तंत्र पर कार्य कर रहे हैं, एक ऐसी नदी पर जो कि सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा प्राकृतिक रूप से ज्यादा विविधता लिए हुये है। ये भारत के एक बड़े समुदाय को किसी न किसी रूप में प्रभावित करती रही है।

हमारे लिए सभी साझेदारों, जिनकी जरूरतें व सहभागिता अलग-अलग हैं, को एक मंच पर लाना एक साथ एक उद्देश्य के लिए प्रोत्साहित करना मुश्किल था, यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी। हमने धरातल पर चल रही विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन, नेहरू युवा केन्द्र संगठन से जुड़ने की कोशिश की, लेकिन पाया कि ये सब परियोजनाएं भी पूरी तरह से स्थापित नहीं हैं। गंगा के किनारे गांव-गांव में भटकते हुए हमें बहुत से ऐसे लोग मिले जो गंगा के प्रति आस्थावान थे, गंगा के लिए कुछ करना चाहते थे, कुछ लोग सामाजिक कार्यों से जुड़े थे, कुछ हमारी उपस्थिति और जैव विविधता के संरक्षण के लिए किये जा रहे कार्यों को लेकर उत्सुक थे और कुछ ऐसे भी थे जो आजीविका से संबन्धित कुछ काम की उम्मीद से हमसे जुड़ना चाहते थे। इन सबसे मिलने और बात करने के बाद हमने विचार किया कि हमें सामुदायिक सहभागिता के पारम्परिक तरीकों को न अपना कर सीधे व्यक्ति विशेष पर ध्यान केंद्रित करना होगा। बहुत से युवाओं ने गंगा संरक्षण के कार्य से जुड़ने में रूचि दिखाई जिनके सहयोग से हमने क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को मजबूत किया। हमसे जुड़ने वाले सभी लोग किसी न किसी रूप मे गंगा से जुड़े गंगा के किनारे रहने वाले समुदायों के लोग हैं, गंगा से उनका सीधा रिश्ता है, सभी गंगा के लिए चिंतित हैं, हमने उन्हें नाम दिया **''गंगा के रक्षक-गंगा प्रहरी''**। इसके साथ ही हमारा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म भी शुरु हो गया, जिसमें इच्छुक लोगों को गंगा प्रहरी के तौर पर रजिस्टर किया गया। उनका डेटाबेस तैयार किया गया। कार्यक्रम में शामिल होने वाले गंगा प्रहरियों का डाटाबेस राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन एवं अन्य संबंधित संगठनों, संस्थानों एंव रेखीय एजेन्सियों को दिया गया ताकि उनके कार्यक्रमों में गंगा प्रहरियों को प्राथमिकता दी जा सके। गंगा प्रहरियों को उनकी रूचि और शैक्षिक योग्यता के अनुसार संबंधित विभागों के कौशल विकास प्रशिक्षणों से जोड़ा गया। उनको रोजगार के

अवसर प्रदान करने हेतु वन विभाग, सिंचाई विभाग, मत्स्य विभाग, राज्य कार्यक्रम प्रबन्धन समूह (SPMGs) और अन्य अनुसंधान और विकास संगठनों, विभागों से सम्बद्ध किया गया। इसका उद्देश्य गंगा प्रहरियों को गंगा और इसकी सहायक नदियों में भारतीय वन्यजीव संस्थान तथा अन्य संस्थानों द्वारा किये जा रहे क्षेत्र आधारित सर्वेक्षण में कार्य/सहायता के लिए वरीयता देना व उच्च शिक्षा प्राप्त करने/ प्रशिक्षण /कौशल विकास कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने के इच्छुक गंगा प्रहरियों को भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा विभिन्न शिक्षण संस्थानो में प्रवेश देने हेतु अनुशंसा करना था। हमारा उद्देश्य गंगा प्रहरियों की आजीविका को सुरक्षित एवं सक्षम बनाना था, जो कि जैव विविधता संरक्षण, स्वच्छ गंगा के अनुकूल हो। गंगा प्रहरियों के नेतृत्व में गंगा नदी से संबन्धित गतिविधियां समुदाय के लिए प्रेरणा साबित हों, और ये अपनी बेहतरी की दिशा में काम कर पायें।

गंगा प्रहरी के रूप में जुड़े लोगों से लगातार बातचीत की गई। ये सोचा गया कि कैसे हम सब मिलकर गंगा की स्वच्छता और जैवविविधता को बचाने के लिए कोई रास्ता निकाल सकते हैं। जब इन लोगों की संख्या 250 तक पहुँच गई तब उनके लिए एक राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में जैवविविधता संरक्षण और गंगा स्वच्छता के साथ गंगा में रहने वाले जलीय जीवों और गंगा स्वच्छता में उनके महत्व एवं योगदान को बताया गया।

कार्यशाला का आयोजन परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश में किया गया। जहां गंगा किनारे के अलग-अलग समुदायों से आये लोग एकत्र हुये। यहां लोगों को गंगा का एक अलग ही स्वरूप देखने का मौका मिला। इनमें से कई लोग ऐसे थे जिन्होंने पहाड़ों से निकलती गंगा को ही पहली बार देखा था। उनकी समझ गंगा की पारिस्थितिकीय विविधता के लिए बढ़ी। इस कार्यशाला से वे इतने प्रोत्साहित हुए कि उन्होंने समुदाय में स्वयं को बदलाव लाने के लिये, एक पथ प्रदर्शक के रूप में देखा। अपने-अपने स्थानों में जाकर उन्होने जैवविविधता संरक्षण का संदेश देना शुरू किया। इनके प्रयासों से गंगा किनारे के सभी पाँच राज्यों के 27 जिलों में 1300 से अधिक लोगों ने गंगा प्रहरी के रूप में स्वयं को नामांकित कराया।

गंगा की अविरलता एवं निर्मलता के लिये कार्य करने के साथ-साथ वे सामाजिक बदलावों में भी सक्रिय होकर एक सामाजिक नेतृत्वकारी की भूमिका में उभरने लगे। एक राष्ट्र स्तरीय संस्थान से जुड़ने के कारण उनको अलग पहचान मिली जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा। ये लोग अपने गांवों और समुदायों के लिए जो कार्य करना चाहते थे उसमें हमारे द्वारा पूर्ण सहयोग दिया गया। गंगा प्रहरी के प्रारूप को तैयार करने में उनकी जीवन शैली को बदलने की अवधारणा पर जोर दिया।

गंगा प्रहरी बनने के लिये लोगों के नामांकन को लेकर हम बहुत उत्साहित थे। ये सच है कि केवल उत्साह और जागरूकता से ही किसी परियोजना को नहीं चलाया जा सकता। उसे लोगों के हितों से जोड़कर देखना, समुदाय से जुड़ने के लिए आवश्यक हो जाता है। हमारा अनुभव रहा है कि सरकारी योजनाओं से पैसे देकर किसी भी कार्य की निरंतरता को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है। मानवीय संसाधन एवं उनसे जुड़ी संस्थाओं को सुदृढ़ कर उनकी क्षमताओं के

विकास को केंद्र में रखते हुए उनको आत्मनिर्भर बनाने की शुरुआत की जा सकती है। इसके लिये उनको दो तरह के प्रशिक्षणों से जोड़ा गया। (1) **जागरूकता तथा जलीय जीव बचाव संबंधी (2) वैकल्पिक आजीविका संवर्द्धन।**

इस परियोजना ने गंगा प्रहरियों को एक ऐसा मंच दिया जहां वे अपनी बात आम जन से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचा रहे हैं। अपनी नेतृत्व क्षमताओं को लगातार बढ़ा रहे हैं। उन्हें रेडियो, टी0वी0, अखबार तथा अन्य संचार माध्यमों से जोड़ा गया। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप गंगा प्रहरी एक ब्रांड के रूप में उभरे व इस तरह समुदाय के लोग हमसे जुड़ते चले गये। आज 2100 से ज्यादा गंगा प्रहरी गंगा के किनारे पांचों राज्यों में सक्रिय रूप से अपनी गतिविधियों से लोगों को जागरूक कर इस अभियान का हिस्सा बने हैं। इस अभियान की सबसे अहम् बात महिलाओं का वृहत् स्तर पर कार्यक्रम से जुड़ाव है जिन्हें जोड़ना, घरों से बाहर निकालना परियोजना के शुरुआती दिनों में एक चुनौती था। आज वे जैवविविधता संरक्षण के साथ आजीविका से संम्बधित कार्य कर रही हैं। गंगा प्रहरी चयन की प्रक्रिया ने यह सुनिश्चित किया कि इस तरह के विचारों के साथ की गई पहल, भौतिक बदलावों की तुलना में ज्यादा प्रभावशाली हैं।

इस परियोजना से जुड़कर लोगों की सोच तथा व्यवहार में परिवर्तन आया है। विभिन्न शैक्षिक, आर्थिक और सामाजिक परिवेशों से आने वाले गंगा प्रहरी एक ही उद्देश्य के लिए कार्यरत हैं, उनकी समझ में बदलाव आने के साथ गंगा के पर्यावरण संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी बढ़ी है, सूक्ष्म स्तर पर बदलाव दिखने लगे हैं। गंगा प्रहरी हर त्यौहार, कार्यक्रम तथा गतिविधियों को गंगा की जैवविविधता संरक्षण और स्वच्छता कार्यक्रमों से जोड़कर मनाते हैं।

इस परियोजना की मुख्य उपलब्धियों में स्थानीय समुदायों का जुड़ाव, गंगा की स्वच्छता एवं जैव. विविधता संरक्षण का एक जनांदोलन के रूप में उभरना हैं। सबसे निचले स्तर से स्थानीय नेतृत्व उभर रहा है, जो कि एक बड़े बदलाव का संकेत है। हम एक ऐसे जागरूक और स्वप्रेरित समाज की ओर कदम बढ़ा रहे हैं जो गंगा की अविरलता, निर्मलता तथा जलीय जीवों के संरक्षण के लिये प्रतिबद्ध है।

यह किताब गंगा प्रहरियों के व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है। कुछ गंगा प्रहरियों ने अपने अनुभवों को हमारे साथ बांटा तो हमने उनके जीवन में आये परिवर्तनों को कलमबद्ध करके लोगों के साथ साझा करने का निश्चय किया। उनके अनुभव दर्शाते हैं कि कैसे एक सही मंच मिलने पर ग्रामीण आम से खास, गांववासी से गंगा प्रहरी बन सकता है। हमें उनके बढ़े हुये हाथों को थामना है। यह एक आवाज है उन सभी देशवासियों के लिये जो गंगा की अविरलता और निर्मलता के लिये संवेदनशील है, वे गंगा प्रहरी मंच के माध्यम से भारतीय वन्यजीव संस्थान एवं राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के साथ जुड़कर अपना योगदान दे सकते हैं।

रुचि बडोला
एस.ए. हुसैन

फ्लैग-इन
गा आमंत्रण अभियान
13 मार्च 2020
दि अशोक, नई दिल्ली
Flag-in
a Aamantran Abhiyan
13th March
The Ashok,

अमित शाह

अनुक्रमणिका

भाग –1 (गंगा प्रहरी : नदियों के रक्षक)

पवन कटियार **2-5**

मयंक ओझा **6-7**

मानिक कांत रजक **8-9**

कुणाल कुमार सिंह **10-10**

हेमा पंत **11-12**

राधिका गुसांई **13-14**

ज्ञान चन्द्र ज्ञानी **15-16**

गुड्डन सिंह **17-18**

उत्तम सिंह पंवार **19-21**

दीपक कुमार **22-23**

संघिनी घोष **24-25**

महिसिन खान **26-27**

चित्रा पॉल **28-29**

संगीता निषाद **30-31**

रमा तिवारी **32-33**

राजेश निषाद **34-35**

निहारिका पटेल **36-37**

पायल शर्मा **38-39**

दर्शन निषाद **40-41**

शकुन्तला देवी **42-43**

नागेन्द्र कुमार निषाद **44-45**

राजेश कुमार **46-46**

बिप्लव हालदर **47-48**

फरजाना शमीम **49-50**

पूर्णाचन्द्रा दास **51-53**

ज्योति निषाद **54-55**

कृष्णा कुमारी **56-57**

गोपाल वर्मा **58-59**

भाग –2 (गंगा प्रहरी मेंटर)

अनिल प्रकाश जोशी
62-64

गीता गैरोला
65-67

मनोज शर्मा
68-70

सुधा शर्मा
71-75

शुभदीप सरकार
76-80

विभा रावत
81-83

जोहन क्रेग
84-86

हर्षा लखेड़ा
87-88

परिवा डोबरियाल
89-91

सौरव गवान
92-95

दीपिका डोगरा
96-97

संगीता अंगोम
98-100

अदिति देव
101-103

हेमलता खण्डूरी
104-106

गंगा प्रहरी
गंगा प्रहरी
गंगा प्रहरी
गंगा प्रहरी

भाग–1

गंगा प्रहरी : नदियों के रक्षक

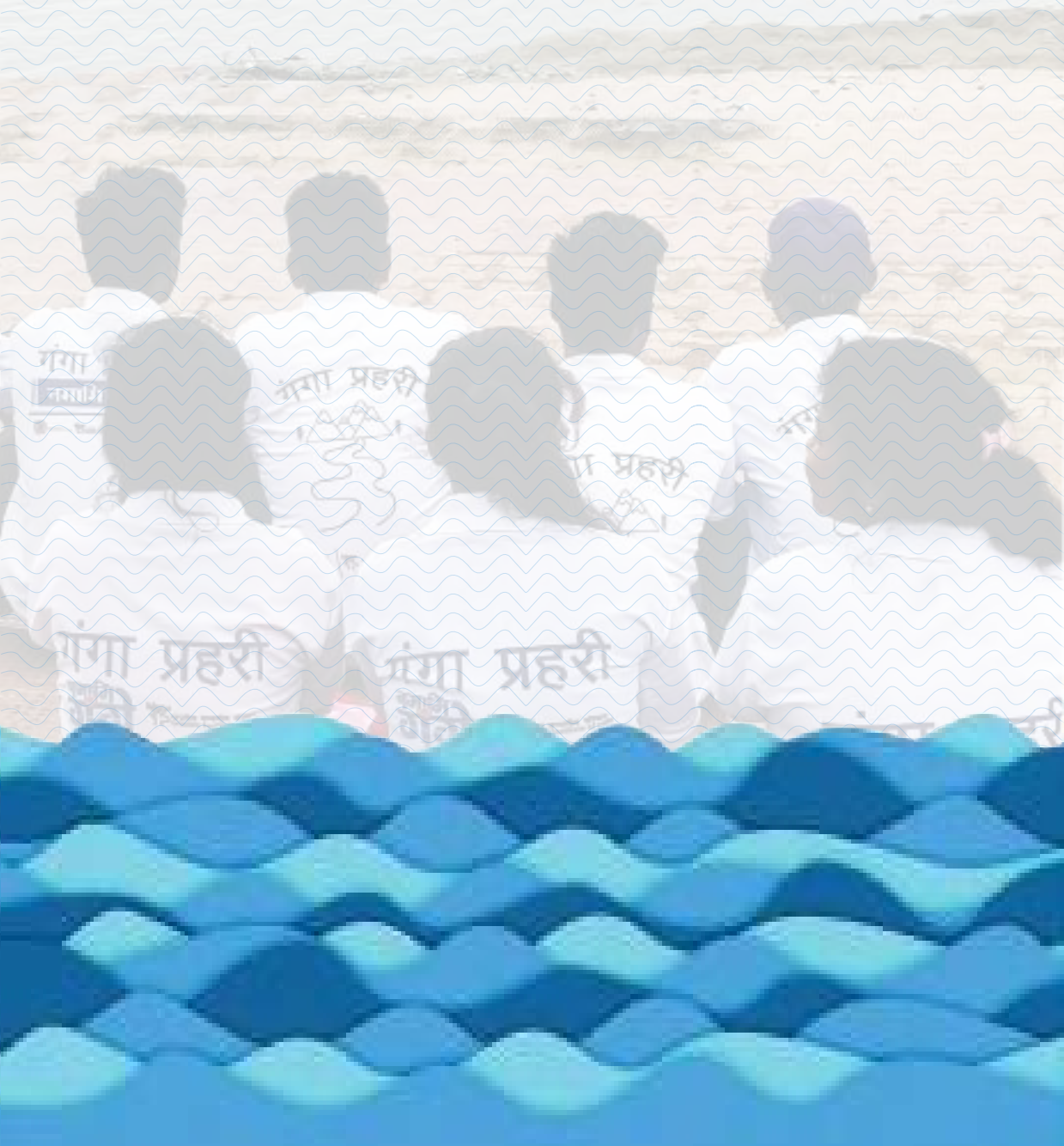

पवन कटियार

(गंगा प्रहरी, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश)

फर्रूखाबाद उत्तरप्रदेश के ग्राम कटिहार का निवासी मैं 24 वर्षीय पवन कुमार कटियार हूँ। गणित में स्नातक की उपाधि ली है। व्यावसायिक और तकनीकी योग्यता में कार्यालय प्रबंधन में एक वर्षीय डिप्लोमा तथा एक वर्षीय कम्प्यूटर डिप्लोमा किया है। स्वभाव और व्यवहार से मैं एक सामाजिक कार्यकर्ता हूँ, विगत दो वर्षो से खुद को लेखक एवं कवि के रूप में स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। एक गंगा प्रहरी के रूप में शून्य से शीर्ष की ओर बढ़ने की अनवरत यात्रा की कड़ी में इस लेख के माध्यम से आप लोगों तक अपनी इस यात्रा को साझा करने का अवसर मिला है। इससे पूर्व मैं एक साधारण व्यक्ति की तरह जीवन व्यतीत कर रहा था। वही एक सोच के साथ कि पढ़ाई जल्दी पूरी हो जाये और एक अच्छी सी नौकरी मिल जाये जिससे मैं अपने परिवार की उम्मीदों पर खरा उतर सकूं इसलिए स्कूल, कोचिंग, पढ़ाई और मनोरंजन बस यही एक दुनिया थी। रही गंगा से जुड़ने की बात तो कभी-कभी मन हुआ तो घूम आये गंगा के किनारे मन की शांति के लिए या फिर किसी के दाह संस्कार में और मनोरंजन के लिए साल में एक बार मेला श्री रामनगरिया जो कि पांचाल घाट के पास गंगा के पश्चिमी घाट में लगता है, वहां हम सभी मित्र एक साथ घूमने जाते थे। उन दिनों मैं गंगा को केवल धार्मिक नजरिये से देखता था क्योंकि हमारे धर्मग्रंथों मे गंगा को मां का दर्जा दिया गया है। इसके चलते एक सोच मन में पहले से ही घर कर गई थी कि मुझे स्वयं गंगा में गंदगी नहीं फेंकनी है नहीं तो पाप के भागीदार होंगे, इसके अतिरिक्त अन्य बातों से कोई लेना देना नहीं था। घाट पर लिखे स्लोगन भी दिखते थे और अक्सर कोई ना कोई घाट पर झाड़ू लगाते या पॉलिथिन एकत्र करते दिख जाता था। मुझे ये सब देख कर अच्छा लगता, उनके साथ कभी-कभी काम करने का मन भी करता था पर मुझे लगता इससे क्या होगा, गंदगी तो फिर फैल जायेगी और सारी मेहनत बरबाद हो जायेगी। फिर सोचता कि गंगा तो इतनी बड़ी नदी है, इसमें थोड़े बहुत कूड़े से क्या होगा बह जायेगा आगे चला जायेगा और पॉलिथीन की तो सबको जरूरत होती है तो लायेंगे ही। लेकिन फिर भी वो लोग मुझे प्रभावित ही करते जिज्ञासा वश मैंने उनसे जानने की कोशिश की तो उनमें से एक सज्जन ने बताया कि वो एक सामाजिक संस्था से जुड़े हैं। वे लोग अकसर निस्वार्थ भाव से गंगा के किनारे स्वच्छता अभियान चलाते हैं। मैंने उनकी बात को सुना और वहां से चला आया। लेकिन ये सवाल लगातार मन को मथता रहा कि गंगा में इतनी अधिक गंदगी को इतने कम लोग किस तरह से साफ कर सकते हैं और साथ ही ये भी लगता कि ये काम तो सरकारी स्तर पर होना चाहिये, सरकार को चाहिये कि वो गंगा की स्वच्छता का काम करवाये। जब भी मैं गंगा के किनारे जाता ये सवाल लगातार मन में उठते।

भाग–2

गंगा प्रहरी मार्गदर्शक

फोटो गैलरी

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन और भारतीय वन्यजीव संस्थान की टीम

उत्तर प्रदेश कलाईमेट चेंज कॉनक्लेव 2021 के दौरान उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी को राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन और भारतीय वन्यजीव संस्थान की परियोजना की गतिविधियों से अवगत करवाती डब्लूआईआई प्रोजेक्ट टीम

प्रयागराज कुम्भ मेले में माननीय सड़क, परिवहन और राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी जी के साथ उत्तर प्रदेश के गंगा प्रहरी

माननीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत के साथ वार्तालाप करते हमारे गंगा प्रहरी

नदी उत्सव के दौरान जैवविविधता जागरूकता पद यात्रा को झण्डी दिखा कर रवाना करते
पद्मभूषण डॉ0 अनिल प्रकाश जोशी

जलज नौका– गंगा प्रहरी उत्पाद बिक्री एवं प्रदर्शनी केन्द्र, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

वैकल्पिक आजीविका केन्द्र उद्घाटन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

देवप्रयाग में वृक्षारोपण करती उत्तराखण्ड की गंगा प्रहरी

बुलन्दशहर में वृक्षारोपण सप्ताह मनाते हुए गंगा प्रहरी

प्रयागराज कुम्भ मेले में सफाई का कार्य करते हुए गंगा प्रहरी

आर्द्रभूमि के निकट साफ सफाई करते गंगा प्रहरी, हरदोई, उत्तर प्रदेश

मृत गांगेय डॉल्फिन की मोर्फोमैट्रिक डिटेल लेते नादिया, पश्चिम बंगाल के गंगा प्रहरी

प्रयागराज में गांगेय डॉल्फिन के बचाव में समर्पित गंगा प्रहरी

स्कूली छात्रों के साथ वॉटर एण्ड वैटलैण्ड कार्यक्रम मनाते हुए कन्नौज के गंगा प्रहरी

गंगा संरक्षण के लिये जागरूकता अभियान करते प्रयागराज के गंगा प्रहरी

हरित कौशल विकास कार्यक्रम के दौरान कम्पोस्ट पिट बनाने की विधि सीखते वाराणसी के गंगा प्रहरी

दीनापुर वाराणसी सीवेज ट्रीटमेंट प्लान्ट का जायजा लेते वाराणसी के गंगा प्रहरी

बाल गंगा प्रहरियों को जैव विविधता के विषय में जानकारी देते पश्चिम बंगाल के गंगा प्रहरी

माघी मेला के दौरान गंगा जैव विविधता के विषय में संथाल जनजाति को जागरूक करते झारखंड के गंगा प्रहरी

सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त करती वाराणसी की गंगा प्रहरी

स्थानीय संसाधनों से लड्डू प्रसाद एवं बेकरी के उत्पाद बनाती उत्तराखण्ड की गंगा प्रहरी

भागलपुर बिहार के गंगा प्रहरियों द्वारा गंगा किनारे बनाया गया जैविक कूड़ादान

कोविड-19 महामारी के दौरान पश्चिम बंगाल के गंगा प्रहरियों द्वारा बनाये गये वन टाईम यूज मास्क

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जन जागरूकता अभियान चलाते उत्तराखण्ड के गंगा प्रहरी

स्थानीय स्कूलों में बाल गंगा प्रहरी कार्यक्रम के दौरान बच्चों को जैव विविधता संरक्षण के लिये प्रेरित करते वाराणसी के गंगा प्रहरी

प्रयागराज कुंभ मेले में पर्यटकों को गंगा जैव विविधता के विषय में जानकारी देते गंगा प्रहरी

गंगा प्रहरी आजीविका केन्द्र के प्रशिक्षणार्थी गंगा स्वच्छता पखवाड़ा मनाते हुए

आर्द्रभूमि की बहाली के प्रयासों में जुटे उत्तर प्रदेश के गंगा प्रहरी

हुगली, पश्चिम बंगाल की दाहभील आर्द्रभूमि में वैट लैण्ड एण्ड वॉटर कार्यक्रम के दौरान स्थानीय समुदाय के साथ कूड़ादान स्थापित करते गंगा प्रहरी

विश्व पर्यावरण दिवस में वर्ल्ड वाइल्ड लाईफ फण्ड के परिसर में विशेषज्ञों से चर्चा के दौरान गंगा प्रहरी

विश्व पर्यावरण दिवस में प्रतिभाग करते गंगा प्रहरी

ग्राम स्तरीय सूक्ष्म नियोजन में जुटे वाराणसी के गंगा प्रहरी

'कैच द रेन' कैम्पेन के दौरान चालखाल की सफाई करते रूद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड के गंगा प्रहरी

हैल्थ एण्ड वेलनैस प्रशिक्षण : घरेलू उत्पादों से सौंदर्योपचार सीखते गंगा प्रहरी

नोट

NATIONAL MISSION FOR CLEAN GANGA (NMCG)
MINISTRY OF JAL SHAKTI

GANGA AQUALIFE CONSERVATION MONITORING CENTRE (GACMC)

WILDLIFE INSTITUTE OF INDIA
Chandrabani, Dehradun -248001 Uttarakhand
www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga

M/S BISHEN SINGH MAHENDRA PAL SINGH
PUBLISHERS & DISTRIBUTORS OF SCIENTIFIC BOOKS
23-A, New Connaught Place, Dehra Dun - 248 001 (INDIA)
Ph.: 91-135-2715748 Fax: 91-135-2715107;
E-mail: bsmpsbooks@gmail.com

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India